प्रकृति का अंधाधुंध दोहन बंद करें

संदीप भट्ट

प्रकृति ही जीवन की वास्तविक उत्पत्तिकर्ता है। इस दुनिया में जो भी सबसे आदि है - वह सिर्फ प्रकृति ही है। प्रकृति के प्रतिकृति ही जीवन है। फिर चाहे वह जीव-जंतु हों या वायु, जल, जंगल और जमीन। हर तरफ प्रकृति अपने विविध रूपों में व्याप्त है। प्रकृति प्रदत्त संसाधन ही इस धरा पर जीवन का असली आधार हैं। मनुष्य समेत अन्य सभी जीव इन्हीं प्राकृतिक संसाधनों के सहारे अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं। लेकिन बीते कुछ सालों में दुनिया भर में इन संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हुआ है। इस पूरी प्रक्रिया ने प्रकृति और पर्यावरण को जबरदस्त नुकसान पहुंचाया है।

नतीजतन आज ग्लोबल वार्मिंग और मौसम में विपरीत बदलाव देखने को मिल रहे हैं। भारत में ही देखें तो कहीं अतिवृष्टि में डूबे हुए राज्य हैं तो कहीं रेलगाड़ी से पानी पहुंचाना पड़ रहा है। पिछले साल केरल में आई बाढ़ अभी तक भूले नहीं भूलती। वहीं इस बरस बिहार और अधिकतर पूर्वोत्तर का इलाका उफनती नदियों और बाढ़ के प्रकोप से बेहाल है। दूसरी तरफ राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में अधिकतर इलाकों में सावन की घटाओं के बरसने के लिए लोग टकटकी लगाए आसमान में ताक रहे हैं।

मौसम के मिजाज में तेजी से हो रहे बदलाव की मार से हर वर्ग परेशान है। क्या किसान, क्या आमजन और क्या उद्योगपति - हर वर्ग के लिए प्रकृति का संतुलन आवश्यक है। लेकिन असल सवाल यह है कि प्रकृति इस तरह हमसे रूठी-रूठी क्यों मालूम पड़ती है? क्या कारण है कि प्रकृति ने अपने चक्र को इस कदर बदल दिया है? इस सवाल का संभावित जवाब है कि प्रकृति के इस बदले स्वभाव की अधिकतम जिम्मेदारी मानव समाज की है। प्रकृति के हर संसाधन के संरक्षण के लिए गंभीर कदम उठाने की आवश्यकता है।

प्रकृति के सभी संसाधन सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। चाहे जल हो या थल, जंगल हों अथवा वायु - हर प्राकृतिक संसाधन को संपूर्ण मानव समाज के भविष्य के लिए संरक्षित करना जरूरी है। बीती शताब्दी में दुनिया में आबादी विस्फोटक रूप से बढ़ी है। मानव के जीवन की निरंतरता ही प्राकृतिक संसाधनों से है। अरबों लोग रोजाना के जीवन में प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल करते हैं लेकिन प्रकृति को बदले में कुछ भी नहीं देते। जबकि होना यह चाहिए कि हम जो भी कुछ प्रकृति से लें, अवश्य ही उसके संवर्द्धन के लिए भी कुछ न कुछ करें।

बीते दिनों गर्मी के मौसम में अधिकतर इलाकों में भीषण जल संकट छाया रहा। चेन्नई जैसे महानगरों से लेकर सुदूर गावों तक पानी के लिए लोग भटकते रहे हैं। आंकड़े बताते हैं कि धरती पर उपलब्ध जलराशि का

केवल 2.5 फीसदी पानी ही पीने योग्य है। केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट कहती है सालाना 4000 घन मीटर की बारिश की बूंदों का एक चौथाई भाग का भी हम सही उपयोग नहीं कर पाते हैं। सरकार का आंकलन कहता है कि साल 2050 तक प्रतिव्यक्ति सालाना जल की उपलब्धता महज 1140 घनमीटर रह जाएगी जो कि एक अतिगंभीर समस्या होगी। 2011 की जनगणना के अनुसार अभी प्रतिव्यक्ति वार्षिक जल की उपलब्धता 1545 घनमीटर है।

विज्ञान और पर्यावरण के क्षेत्र में चर्चित और लोकप्रिय पत्रिका 'डाउन टू अर्थ' की मार्च 2019 की रिपोर्ट बताती है कि भारत में 2017 में अकेले वायु प्रदूषण से ही 12 लाख लोगों की मौत हुई। लगातार वनों का सिमटता क्षेत्र न सिर्फ वायु प्रदूषण में बढ़ोतरी का एक प्रमुख कारक है, बल्कि घटते जंगलों, मृदा (मिट्टी) के कटाव और बारिश की कमी के लिए भी उत्तरदायी है। नदियों में प्रदूषण खतरनाक स्तर तक बढ़ गया है। गंगा, यमुना, नर्मदा जैसी महत्वपूर्ण नदियां प्रदूषण की मार झेल रही हैं। जल, थल और वायुमंडल में हमने प्रकृति के किसी भी संसाधन को हानि पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। प्रकृति किसी व्यक्ति, समूह या समुदाय विशेष का विषय नहीं है। यह पूरी मानव जाति की साझी धरोहर है जिसका क्षरण लगातार हो रहा है।

ऐसे में अहम प्रश्न यह है कि प्रकृति में संसाधनों का बढ़ता असंतुलन कैसे ठीक होगा? इस दिशा में समूचा मानव समाज एक साथ कब आगे बढ़ेगा। मनुष्य प्रकृति के संसाधनों का उपयोग लगातार कर रहा है लेकिन उसके संरक्षण की दिशा में बहुत कम ही प्रयास हुए हैं। ऐसे में अगर हम प्रकृति के इन अनमोल संसाधनों का संरक्षण नहीं करेंगे तो हमारी जिंदगी के लिए जरूरी ये सभी धरोहरें जल्द ही एक दिन खत्म हो जाएंगी। प्रकृति को हमें खुद के लिए बेहतर रखना होगा। हमें इसके हर संसाधन का सदुपयोग और संरक्षण करना होगा। समय-समय पर प्रकृति और इसके संसाधनों को पुर्नजीवित, पुनर्भरण करना होगा। इस दिशा में अब सोचने का नहीं बल्कि कुछ कर दिखाने का वक्त है। कहीं ऐसा न हो कि प्रकृति हमसे ऐसे रूठ जाए कि मनाने की गुंजाइश भी शेष न बचे (इति)।

(प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: आलेख के विचार लेखक के अपने हैं, इन विचारों की जिम्मेदारी माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय नहीं लेता।

उक्त आलेख माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा शुरू की गई मनुज फीचर सर्विस के अंतर्गत निशुल्क प्रकाशनार्थ है। कृपया आलेख के अंत में मनुज फीचर सर्विस प्रकाशित करने का अनुरोध है।